RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · DECEMBER 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

संकट काल में पूरी दुनिया ने देखी नरेंद्र मोदी की अद्भुत नेतृत्व क्षमता

साल 2020 भले बहुत ज्यादा समस्याएं लेकर आया लेकिन जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे बढ़कर सभी चुनौतियों का सामना करने में देश का नेतृत्व किया और देश को एकजुट किया वह अपने आप में मिसाल है। कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी से निबटने में जहां दुनिया के बड़े नेताओं के हाथ–पाँव फूले जा रहे थे वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समय पर और सही निर्णय लेकर देश को बड़ा नुकसान होने से बचा लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर जनता कैसे एकजुट हो जाती है यह दुनिया ने तब देखा जब उन्होंने जनता कर्फ्यू का आह्वान किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपीलों का असर कैसा होता है यह दुनिया ने तब देखा जब प्रधानमंत्री ने कोरोना वारियर्स के प्रति सम्मान प्रकट करने और महामारी के खिलाफ लड़ाई के दौरान नया उजाला करने के लिए पहले ताली और थाली बजाने की अपील की, फिर दीया और मोमबत्ती जलाने की अपील की। बड़े से बड़े व्यक्ति ने भी देश के साथ खड़े होकर दीया जलाया और गांव में रहने वाले गरीब ने भी जैसे–तैसे कर दीया जलाया और प्रधानमंत्री की ओर से उठाये जा रहे कदमों का समर्थन किया। प्रधानमंत्री ने पीएम केयर्स फंड बनाकर लोगों से दान की अपील क्या की देखते ही देखते लोग आगे आने लगे और इस फंड ने चाहे प्रवासी मजदूरों को राहत दिये जाने की बात हो, वेंटिलेटर खरीदे जाने की बात हो...तमाम मोर्चों पर देश की मदद की।

संकट के समय सबसे बड़ी परीक्षा देश का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति की ही होती है और पूरी दुनिया ने देखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ना सिर्फ भारत में रहने वालों की चिंता की बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों में बसे भारतीयों और वहां फँसे भारतीयों की भी चिंता की। यही नहीं भारत की विश्व कल्याण की भावना को आगे बढ़ाते हुए समय–समय पर विभिन्न जरूरत वाली दवाइयों को दुनिया के बड़े देशों को भी भेजा गया और छोटे देशों की भी सिर्फ दवा ही नहीं चिकित्सा उपकरणों और अन्न से भी मदद दी गयी। ब्राजील के प्रधानमंत्री ने तो नरेंद्र मोदी की तुलना हनुमानजी से करते हुए कहा था कि वह संजीवनी बूटी लेकर आ गये हैं। लॉकडाउन के कारण बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हुए तो मनरेगा का दायरा बढ़ाते हुए उसके लिए बजट में विशाल वृद्धि की गयी ताकि गरीबों, मजदूरों को आमदनी होती रहे। लोग कर्ज की किश्तों का भुगतान नहीं कर पा रहे थे तो आरबीआई ने उन्हें छह महीने के लिए राहत दी। दुनिया ने देखा कि कैसे भारत के प्रधानमंत्री समय–समय पर टीवी के माध्यम से देश को संबोधित करते हुए महामारी के खिलाफ लड़ाई में जनता का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं और उनके लिए तमाम राहतों का ऐलान भी कर रहे हैं। यह भी पहली बार हुआ कि देश के प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में उद्योगपतियों, कंपनियों और अन्य नियोक्ताओं से हाथ जोड़ कर अपील की कि अपने कर्मचारियों की तनख्वाह नहीं काटें। उद्योग के जो भी क्षेत्र मंदी की गिरफ्त में आये उनके लिए तमाम प्रोत्साहन दिये गये। अंतरिक्ष समेत नये–नये क्षेत्रों को निजी कंपनियों के लिए खोला गया। इसके साथ ही पहली बार 20 लाख करोड़ रुपए का राहत पैकेज जनता के लिए पेश किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ध्यान सिर्फ भारत में कोरोना की रोकथाम तक ही नहीं रहा बल्कि उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से पहले सार्क देशों की बैठक की पहल की ताकि पड़ोस में यह महामारी थमे और इससे एकजुटता के साथ लड़ा जा सके। इसके बाद उन्होंने तमाम वैश्विक मंचों की बैठक बुलाने की पहल की और भारत ने दिखाया कि संकट के समय अपना ख्याल रखते हुए पूरी दुनिया की चिंता कैसे की जाती है और दुनिया की मदद कैसे की जाती है।

शायद ही किसी प्रधानमंत्री ने अपने कार्यकाल में मुख्यमंत्रियों के साथ इतना संवाद किया होगा जितना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिर्फ एक वर्ष में किया।

समय–समय पर मुख्यमंत्रियों के साथ कोरोना की स्थिति पर चर्चा करने के अलावा उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए केंद्र सरकार के हर मंत्रालय को उन्होंने विशेष रूप से सक्रिय किया। यही नहीं प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न क्षेत्र की हस्तियों, मीडिया जगत के लोगों, उद्योगपतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, बॉलीवुड हस्तियों, खेल प्रतिभाओं के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से चर्चा की। सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास के अपने मंत्र पर आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री ने महामारी से निबटने के दौरान सभी दलों के नेताओं को भी विश्वास में लिया और सर्वदलीय बैठकों के माध्यम से उनके विचार कोरोना से लड़ाई के मुद्दे पर भी जाने और वैक्सीन के मुद्दे पर भी जाने। कोरोना जिस तरह अपनी चाल बदलता रहा उसको लेकर प्रधानमंत्री चिकित्सा विज्ञानियों के भी सतत संपर्क में बने रहे ताकि सरकार की रणनीति हमेशा कारगर साबित हो।

चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों की सुरक्षा के लिए प्रधानमंत्री ने नये कानून तो बनवाये ही उनकी हर जरूरत का भी ख्याल रखा गया। यही नहीं कोरोना वैक्सीन की प्रगति को लेकर स्वयं प्रधानमंत्री विभिन्न कंपनियों के संपर्क में बने रहे और सरकार की ओर से वैक्सीन निर्माण के लिए रिसर्च के दौरान भारी योगदान भी किया गया ताकि घरेलू स्तर पर यह वैक्सीन बन सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बात के लिए चिंतित रहे कि लॉकडाउन के दौरान चीजों का अभाव नहीं हो। चिकित्सा उपकरणों की कमी नहीं हो, लॉकडाउन के दौरान अपने राज्य चले गये प्रवासी मजदूरों के पास खाने की कमी नहीं हो। गरीबों के खाने की चिंता के साथ ही अन्नदाता की आय बढ़ाने के लिए मोदी सरकार ने नये कृषि सुधार कानून लागू करवाये। इस एक वर्ष में हर वर्ग के लिए तमाम तरह की कल्याण योजनाएं घोषित की गयीं साथ ही आम लोगों समेत उद्योग जगत को विभिन्न प्रकार की रियायतें दी गयीं। लॉकडाउन से भले भारतीय अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगा लेकिन प्रधानमंत्री की नीतियों के चलते और आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को गति मिलने के कारण वापस अर्थव्यवस्था में बड़ा उछाल सामने आ रहा है। स्वयं वैश्विक रेटिंग एजेंसियां भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य के प्रति काफी आशान्वित नजर आ रही हैं।

बात सिर्फ कोरोना से लड़ाई की नहीं थी। खुद को प्रधान सेवक और देश का चौकीदार मानने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने चीन को ऐसा सबक सिखाया है जिसकी उसने कल्पना तक नहीं की होगी। पूर्वी लद्दाख में चीनी हिमाकत का मुँहतोड़ जवाब दिया गया। घायल जवानों का हाल जानने और एलएसी पर तैनात जवानों का हौसला बढ़ाने खुद प्रधानमंत्री पूर्वी लद्दाख पहुँचे और चीन को सीधी चेतावनी दी। यही नहीं जब पूरा देश दीवाली मना रहा था तब प्रधानमंत्री जैसलमेर में भारतीय सेना के वीर जवानों को मिठाई खिला रहे थे। देश ने इस दौरान विभिन्न चक्रवातों और तूफानों का सामना भी किया और प्रधानमंत्री वहां भी पहुँचे, हालात का जायजा लिया और मदद की घोषणा की। मौका आने पर प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन को संबोधित करते हुए उसकी कार्यशैली पर कई बड़े सवाल उठाये। राजनीतिक मोर्चे पर भी प्रधानमंत्री ने कमान सँभाली और बिहार में अगर आज एनडीए की सरकार है तो उसका पूरा श्रेय नरेंद्र मोदी को जाता है। इसके अलावा इस साल हुए विभिन्न चुनावों और उपचुनावों में भाजपा ने अपनी शानदार जीत का श्रेय प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों को ही दिया है।

जम्मू–कश्मीर में शांतिपूर्ण और पारदर्शी तरीके से कराये गये चुनाव हों या युवाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित करने की बात हो, रेहड़ी–पटरी वालों से लेकर बड़े उद्योगों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देने की बात हो... सभी क्षेत्रों में काफी काम किया गया है। साल 2020 में अयोध्या में भव्य राममंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन के साथ ही प्रधानमंत्री ने संसद के नये भवन के निर्माण के लिए भी भूमि पूजन किया। संसद के नये भवन के निर्माण कार्य की राह में भले बाधाएं पैदा करने के प्रयास किये जा रहे हों लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन स्पष्ट है और वह बार–बार स्पष्ट कर चुके हैं कि राजनीति इंतजार कर सकती है लेकिन विकास इंतजार नहीं कर सकता। प्रधानमंत्री ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का जो महासंकल्प भारतीयों को दिलाया है उसमें हर व्यक्ति अपने–अपने स्तर से योगदान दे रहा है।

चंदन सिंह

विश्व एड्स दिवस

विश्व एड्स दिवस पूरी दुनिया में हर साल 1 दिसम्बर को लोगों को एड्स (एक्वायर्ड इम्युनो डेफिशियेंसी सिंड्रोम) के बारे में जागरुक करने के लिये मनाया जाता है। एड्स ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेंसी (एचआईवी) वायरस के संक्रमण के कारण होने वाला महामारी का रोग है। यह दिन सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, नागरिक समाज और अन्य स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा एड्स से संबंधित भाषण या सार्वजनिक बैठकों में चर्चा का आयोजन करके मनाया जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने साल 1995 में विश्व एड्स दिवस के लिए एक आधिकारिक घोषणा की जिसका अनुकरण दुनिया भर में अन्य देशों द्वारा किया गया। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, 1981–2007 में करीब 25 लाख लोगों की मृत्यु एचआईवी संक्रमण की वजह से हुई। यहां तक कि कई स्थानों पर एंटीरेट्रोवायरल उपचार का उपयोग करने के बाद भी, 2007 में लगभग 2 लाख लोग (कुल का कम से कम 270,000 बच्चे) इस महामारी रोग से संक्रमित थे।

विश्व एड्स दिवस समारोह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त स्वास्थ्य दिन समारोह बन गया है। विश्व एड्स दिवस स्वास्थ्य संगठनों के लिए लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाने, इलाज के लिये संभव पहुँच के साथ–साथ रोकथाम के उपायों पर चर्चा करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है।विश्व एड्स दिवस का इतिहास

विश्व एड्स दिवस की पहली बार कल्पना 1987 में अगस्त के महीने में थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न द्वारा की गई थी। थॉमस नेट्टर और जेम्स डब्ल्यू बन्न दोनों डब्ल्यू.एच.ओ.(विश्व स्वास्थ्य संगठन) जिनेवा, स्विट्जरलैंड के एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के लिए सार्वजनिक सूचना अधिकारी थे। उन्होंने एड्स दिवस का अपना विचार डॉ. जॉननाथन मन्न (एड्स ग्लोबल कार्यक्रम के निदेशक) के साथ साझा किया, जिन्होंने इस विचार को स्वीति दे दी और वर्ष 1988 में 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाना शुरु कर दिया। उनके द्वारा हर साल 1 दिसम्बर को सही रुप में विश्व एड्स दिवस के रुप में मनाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने इसे चुनाव के समय, क्रिसमस की छुट्टियों या अन्य अवकाश से दूर मनाने का निर्णय लिया। ये उस समय के दौरान मनाया जाना चाहिए जब लोग, समाचार और मीडिया प्रसारण में अधिक रुचि और ध्यान दें सकें।

एचआईवीध्एड्स पर संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रम, जो यूएन एड्स के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1996 में प्रभाव में आया और दुनिया भर में इसे बढ़ावा देना शुरू कर दिया गया। एक दिन मनाये जाने के बजाय, पूरे वर्ष बेहतर संचार, बीमारी की रोकथाम और रोग के प्रति जागरूकता के लिये विश्व एड्स अभियान ने एड्स कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए वर्ष 1997 में यूएन एड्स शुरु किया।

शुरु के सालों में, विश्व एड्स दिवस के विषयों का ध्यान बच्चों के साथ साथ युवाओं पर केन्द्रित था, जो बाद में एक परिवार के रोग के रूप में पहचाना गया, जिसमें किसी भी आयु वर्ग का कोई भी व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो सकता है। 2007 के बाद से विश्व एड्स दिवस को व्हाइट हाउस द्वारा एड्स रिबन का एक प्रतिष्ठित प्रतीक देकर शुरू किया गया था।

विश्व एड्स दिवस पर क्रियाएँ

लोगों में जागरुकता बढ़ाने और उस विशेष वर्ष के विषय के सन्देश को प्रसारित करने के लिये विश्व एड्स दिवस पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ की जाती हैं। लोगों के बीच में जागरुकता बढ़ाना ही कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है। कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गयी है

– समुदाय आधारित व्यक्तियों और संगठनों को योजनाबद्ध बैठक के आयोजन के लिये विश्व एड्स दिवस गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिये। ये अच्छी तरह से स्थानीय क्लीनिकों, अस्पतालों, सामाजिक सेवा एजेंसियों, स्कूलों, एड्स वकालत समूहों आदि से शुरू किया जा सकता है।

– बेहतर जागरूकता के लिए वक्ताओं और प्रदर्शकों द्वारा एकल कार्यक्रम या स्वतंत्र कार्यक्रमों का एक अनुक्रम मंचों, रैलियों, स्वास्थ्य मेलों, समुदायिक कार्यक्रमों, विश्वास सेवाओं, परेड, ब्लॉक दलों और आदि के माध्यम से निर्धारित किये जा सकते हैं।

– विश्व एड्स दिवस से मान्यता प्राप्त एजेंसी बोर्ड द्वारा एक सार्वजनिक बयान को प्रस्तुत किया जा सकता है।

– स्कूलों, कार्य स्थलों या सामुदायिक समूहों के लिये लाल रिबन आशा के चिह्न के रुप में पहनना और बाँटना चाहिये। सामाजिक मीडिया के आउटलेट के लिए इलेक्ट्रॉनिक रिबन भी वितरित किया जा सकता है।

गतिविधियों (जैसे डीवीडी प्रदर्शनियाँ और एड्स की रोकथाम पर सेमिनार) व्यवसायों, स्कूलों, स्वास्थ्य देखभाल संगठनों, पादरी और स्थानीय एजेंसियों को उनके महान काम के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

– किसी सार्वजनिक पार्क में एक कैण्डललाईट परेड आयोजित की जा सकती है या निकटतम एजेंसी में आयोजित गायकों, संगीतकारों, नर्तकों, कवियों, कहानी वक्ताओं और आदि मनोरंजक प्रदर्शन के माध्यम से एड्स की रोकथाम का संदेश वितरित कर सकता है।

– विश्व एड्स दिवस के बारे में जानकारी अपनी एजेंसी की वेब साइट को जोड़ने के द्वारा वितरित की जा सकती है।

– सभी की योजनाबद्ध कार्यक्रमों और गतिविधियों को पहले से ही ई–मेल, समाचार पत्र, डाक से या इलेक्ट्रॉनिक बुलेटिन के माध्यम से वितरित किया जाना चाहिए।

– लोगों को एचआईवी एड्स के लिए प्रदर्शनियों, पोस्टर, वीडियो आदि प्रदर्शित कर के जागरूक किया जा सकता है।

– विश्व एड्स दिवस की गतिविधियों के बारे में ब्लॉग, फेसबुक, ट्विटर के माध्यम से या अन्य सामाजिक मीडिया वेबसाइटों के माध्यम से लोगों के एक बड़े समूह को सूचित किया जा सकता है।

– विश्व एड्स दिवस मनाने के लिये अन्य समूह सक्रिय रूप से योगदान कर सकते हैं।

– एक मोमबत्ती की रोशनी के समारोह को एचआईवी/एड्स के कारण जिन व्यक्तियों का निधन हो गया हो की स्मृति में आयोजित किया जा सकता है।

– धार्मिक नेताओं को एड्स की असहिष्णुता के बारे में कुछ बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

– एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों को साहचर्य प्रदान करने के लिए भोजन, आवास, परिवहन सेवा शुरू की जा सकती है। उन में नैतिकता को बढ़ाने के लिये सामाजिक कार्य, पूजा या अन्य कार्यों में आमंत्रित किया जा सकता है।

–हर्षित
बीजेएमसी

THIS MONTH

December 18, 1956 - Japan was admitted to the United Nations.

*****

December 16, 1969 - The British House of Commons voted 343-185 to abolish the death penalty in England.

*****

December 24, 1992 - Caspar Weinberger and five other Reagan aides involved in the Iran-Contra scandal were pardoned by President George Bush.

*****

December 21, 1993 - The KGB (Soviet Secret Police) organization was abolished by Russian President Boris Yeltsin

*****

December 19, 1998 - The House of Representatives impeached President Bill Clinton, approving two out of four Articles of Impeachment, charging Clinton with lying under oath to a federal grand jury and obstructing justice.

*****

December 20, 1699 - Czar Peter the Great changed the Russian New Year from September 1 to January 1 as part of his reorganization of the Russian calendar.

*****

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Digital Television (dtv): Digital television systems that generally have a higher image resolution than STV (standard television). Also called advanced television (ATV).

*****

Downloading: The transfer of files that are sent in data packets. Because these packets are often transferred out of order, the file cannot be seen or heard until the downloading process is complete.

*****

Field: (1) A location away from the studio. (2) One-half of a complete scanning cycle, with two fields necessary for one television picture frame. There are 60 fields, or 30 frames, per second in standard NTSC television.

*****

Progressive Scanning: In this system the electron beam starts with line 1, then scans line 2, then line 3, and so forth, until all lines are scanned, at which point the beam jumps back to its starting position to repeat the scan of all lines.

*****

Streaming: A way of delivering and receiving digital audio and/or video as a continuous data flow that can be listened to or watched while the delivery is in progress.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

संपादक की कलम से

आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू करने में राज्यों को भी निभानी होगी अपनी भूमिका

विश्व में फैली कोरोना महामारी के बाद अब जब अन्य कई देश अपने बाजारों को पुनः खोलने की ओर अग्रसर हो रहे हैं, ऐसे में भारत के लिए वैश्विक स्तर पर आर्थिक क्षेत्र में अपने योगदान को यदि बढ़ाना है तो आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को तेजी से लागू करना अब जरूरी हो गया है। विश्व के लगभग सभी देशों ने इस दौरान यह महसूस किया है कि विदेशी व्यापार के लिए चीन पर जरूरत से ज्यादा निर्भरता किसी भी देश के लिए ठीक नहीं है। अतः अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सप्लाई चौन में भारत के लिए अपनी भूमिका बढ़ाने का सुअवसर निर्मित हुआ है। इसका पूरा फायदा भारत द्वारा उठाया जाना चाहिए। यूं तो "ईज आफ डूइंग बिजनेस" की अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भारत ने केंद्र सरकार द्वारा लागू किए गए आर्थिक सुधार कार्यक्रम के दम पर काफी सुधार किया है एवं यह वर्ष 2014 की 142 की रैंकिंग से बहुत आगे बढ़कर 2019 में 63वें स्थान पर आ गई है। परंतु अभी भी यदि भारत को विश्व के प्रथम 25 देशों में अपनी जगह बनाना है तो अब राज्य सरकारों को भी अपने स्तर पर कई सुधार कार्यक्रमों को लागू करना होगा। 10 मदों में से मुख्यतः 5 मदों यथा– पूंजी बाजार में निवेशकों के हित सुरक्षित रखने (13), बिजली के लिए मंजूरी लेने (22), ऋण स्वीकृत करने (25), निर्माण कार्य हेतु मंजूरी प्राप्त करने (27) एवं दिवालियापन के मुद्दों को सुलझाने (52) में भारत की रैंकिंग में काफी सुधार होकर वैश्विक स्तर पर प्रथम 50 देशों की श्रेणी में शामिल हो गए हैं। परंतु शेष अन्य 5 मदों यथा– अनुबंध पत्रों को लागू करने (163), प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री करने (154), नया व्यवसाय प्रारम्भ करने (136), टैक्स सम्बंधी मुद्दे सुलझाने (115), एवं विदेशी व्यापार करने (68) में अभी भी हम वैश्विक स्तर पर अन्य देशों से काफी पिछड़े हुए हैं। मदों के नाम के आगे भारत की वर्ष 2019 की रैंकिंग दी गई है। एक अनुमान के अनुसार, भारत में "ईज आफ डूइंग बिजनेस" में सुधार के लिए अब 60 प्रतिशत से ज्यादा काम राज्य स्तर पर करने होंगे। केंद्र सरकार तो लगातार आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू कर रही है। साथ ही कुछ राज्य भी इस क्षेत्र में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं जैसे, आंध्र प्रदेश "ईज आफ डूइंग बिजनेस" के मानदंडों में देश में प्रथम स्थान पर है, जबकि उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान पर एवं तेलंगाना, तृतीय स्थान पर है। साथ ही मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड ने भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी रैंकिंग में बहुत सुधार किया है। बाकी प्रदेशों विशेष रूप से पूर्वी राज्यों एवं उत्तर पूर्वी राज्यों को भी अब आगे आना होगा। उक्त कारणों के चलते ही भारत में विभिन्न राज्यों के बीच सकल घरेलू उत्पाद में विकास की दर में बहुत अंतर है, विशेष रूप से औद्योगिक उत्पादन की दर में। गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु औद्योगिक दृष्टि से विकसित राज्यों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अब उत्तर प्रदेश भी तेजी से इस मानचित्र पर उभर रहा है। परंतु कुछ अन्य राज्यों में औद्योगिक वृद्धि दर तुलनात्मक रूप से बहुत कम है। इस कारण से इन राज्यों में रोजगार के अवसर निर्मित नहीं हो पा रहे हैं। भारत में सकल घरेलू उत्पाद में औद्योगिक क्षेत्र का योगदान मात्र 16 प्रतिशत ही बना हुआ है और यह बहुत प्रयास के बाद भी आगे नहीं बढ़ पा रहा है। अब देश के सामने एक अवसर आया है, यदि राज्य सरकारें इस क्षेत्र में आर्थिक सुधार कार्यक्रम लागू करने में सफल हो जाती हैं तो कई बड़ी कम्पनियों को अपनी उत्पादन इकाईयों को भारत के इन राज्यों में स्थापित करने में आसानी होगी।

हमारे देश में बिजली, कृषि, जल आपूर्ति, शिक्षा, आदि अन्य कई क्षेत्र राज्यों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं अतः इन सभी क्षेत्रों में सुधार कार्यक्रम लागू करने के लिए राज्य सरकारों को ही निर्णय लेने होंगे। अब समय आ गया है जब राज्य सरकारों को अपना ध्यान अन्य बातों से हटाकर आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लागू करने में लगाना होगा। जब तक "ईज आफ डूइंग बिजनेस" की वैश्विक रैंकिंग में भारत अपनी रैंकिंग में सुधार नहीं कर पाता है तब तक देश में निजी क्षेत्र से पूंजी निवेश भी नहीं बढ़ पाएगा। निजी क्षेत्र से पूंजी निवेश के बगैर केवल सरकार अपने खर्चों से देश की अर्थव्यवस्था को कब तक विकास के पथ पर बनाए रख सकती है। इसकी भी दरअसल कई प्रकार की सीमायें हैं। निजी क्षेत्र को भी अब अपना पूंजी निवेश देश में बढ़ाना अनिवार्य हो गया है, साथ ही विदेशी निवेश भी देश में प्रोत्साहित करना अब आवश्यक होगा, ताकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सप्लाई चौन में भारत की स्थिति को मजबूत किया जा सके। इससे देश में न केवल आर्थिक विकास को गति मिलेगी बल्कि रोजगार के नए अवसरों का सृजन भी होगा। कोरोना वायरस महामारी के बाद तो दुनिया भर के देशों के सामने अलग अलग रास्ते खुले हुए हैं। भारत किस तरीके से अपने आपको इसके केंद्र में ला सकता है, यह भारत के लिए एक अवसर के तौर पर देखा जाना चाहिए। देश में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में आधारिक संरचना विकसित करने के लिए निवेश बढ़ाया जा सकता है, जिसका अर्थव्यवस्था पर चहुंमुखी असर होगा। कृषि क्षेत्र, श्रम क्षेत्र, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों की परिभाषा में परिवर्तन आदि कई सुधार कार्यक्रम केंद्र सरकार द्वारा हाल ही में लागू किए गए हैं, एवं अन्य कई क्षेत्रों में भी सुधार कार्यक्रम लागू किए जाने पर काम तेजी से किया जा रहा है जिनका देश के आर्थिक विकास पर दूरगामी परिणाम होगा। परंतु, राज्य सरकारों के लिए भी उक्त वर्णित क्षेत्रों तथा उनके कार्य क्षेत्र में आने वाली अन्य विभिन्न मदों में सुधार कार्यक्रम लागू किए जाने की महती आवश्यकता बन पड़ी है।

Disability Day

3rd December

Disability Day, or the International Day of People with Disability, is a day that has been promoted by the United Nations since 1992. The aim of Disability Day is to encourage a better understanding of people affected by a disability, together with helping to make people more aware of the rights, dignity and welfare of disabled people.

As well as raise awareness about the benefits of integrating disabled persons into every aspect of life, from economic, to political, to social and cultural. Disability Day is not concerned exclusively with either mental or physical disabilities, but rather encompasses all known disabilities, from Autism to Down Syndrome to Multiple Sclerosis.

Learn about Disability Day

Disability Day has been created so that we can all think about how we can create a society that is inclusive and caters to everyone's needs. Did you know that 15 percent of the population across the world has some form of disability? This accounts for around one billion people! That's a very high figure. While we have taken some great strides forward in terms of accessibility and ensuring that disabled people can live as great a life as possible, there are still steps that need to be taken. On this day, we are encouraged to think about how we can create a community that is inclusive for everyone. This day also gives us the perfect opportunity to further our knowledge and awareness about disabilities. There are many different types of disabilities, which can fall into 21 categories. This includes mental illness, intellectual disabilities, hearing impairments, blindness, and more. It is helpful to learn about these conditions so that we know how we can assist anyone who is living with a disability. When we talk about creating a society that is inclusive, we don't only mean ensuring that disabled people are able to travel with ease and can go to any place they wish, but we also mean accessibility in terms of being able to have access to different jobs. There are lots of ways that we can all help and play a role in this.

History of Disability Day

Everything started in 1976, when the United Nations General Assembly made the decision that 1981 should be the International Year of Disabled Persons.The 5 years between the making of that decision and the actual Year of Disabled Persons were spent contemplating the hardships of the disabled, how the opportunities of the disabled could be equalized, and how to ensure the disabled take part fully in community life enjoying all of the rights and benefits non-disabled citizens have.Another issue that was touched on was how world governments could go about preventing disabilities from touching people in the first place, so much of the talk was about the viruses and other illnesses that lead to various kinds of disability.The decade between 1983 and 1992 was later proclaimed the United Nations Decade of Disabled Persons, and during that time, all of the concepts previously created became parts of one long process that was implemented in order to improve the lives of disabled persons the world over.

How to Celebrate Disability Day

Each year since 1992, a variety of events are held in many countries. Disability Day is used for holding discussions, forums and campaigns relating to disability, and communities are encouraged to organize meeting, talks, and even performances in their local areas.These can range from hosting a musical to a play, with disabled people being involved in these productions. The overall aim is to show non-disabled people that a person with a disability can be a vibrant member of society, as it happens that the entirely healthy are not always quite aware of this fact, which can lead to different kinds of discrimination of varying degrees of severity.The disabled, on the other hand, benefit from such performances by proving to themselves that there are many things they can still do, despite their conditions, which can help with their self-esteem and avoid mental issues such as depression from plaguing them.In general, these kinds of events are meant to challenge and them get rid of various stereotypes so that disabled people can enjoy lives free of discrimination and additional hardship.

Each year the day is celebrated there is an emphasis on a new aspect related to improving the lives of people living with a disability. In 2007, for example, the theme of the year was: "Decent Work for Persons with Disabilities".

In 2013, last year, it was "Break Barriers, Open Doors: for an inclusive society and development for all", a call to help disabled people live in an inclusive society in every country, and to make sure that society was as accessible as possible for disabled people in all of its aspects, from making sure buildings are wheelchair accessible to installing braille on elevator buttons.

Another thing you can do on Disability Day is to help someone in need. Why not hire a mobility vehicle and run errands for people in your local area or help them to have some freedom? A mobility vehicle is designed to help people with one kind of disability or another. But there are certain things that you need to know for successful mobility vehicle hire. WAV vehicles come in a variety of sizes and shapes and it is important that the one you opt for fits the needs of the person you are helping. WAVs are classified as large, small, or medium. In order to find the WAV to hire that meets your requirements, you need to keep in mind the weight of the wheelchair, the number of individuals you will travel with, the person's height when seated in the wheelchair, and lastly the equipment you need to go with on your travels.

This should be able to help you determine the right size WAV to hire. The majority of small WAVs can seat four people and they have a ramp instead of a lift to enable easy access. In most cases, small WAVs have lowered floors to allow for more headroom inside the car.

Medium wheelchair accessible vehicles are designed for people with larger wheelchairs that want to travel with more equipment. They can seat between 5-7 people. While most of them come with ramps, some even have an electric lift to make entry easier. They are a great option especially if you normally travel with several passengers. Also, if you have a lot of equipment or a large wheelchair, this option will suit you just fine.

Y.B

भक्ति के साथ-साथ प्रकृति का भी अद्भुत खजाना है तिरुपति बालाजी

तिरुपति बालाजी के मंदिर का अदभुत दृश्य

तिरुपति बालाजी का मंदिर आंध्र प्रदेश के तिरुमाला की पहाड़ियों पर स्थित है। तिरुपति बालाजी को भक्त अगल– अलग नामों से पुकारते हैं। कोई उन्हें वेंकटेश्वर कहता है तो कोई श्रीनिवास। श्रद्धा से महिलाएं उन्हें प्यार से गोविंदा कहती हैं। भारत के सभी मंदिरो की तुलना में तिरुपति बालाजी के मंदिर को सबसे अमीर मंदिर माना जाता है। यहां हर वर्ग के लाखों श्रद्धालु भगवान का आशीर्वाद लेने आते हैं। फिल्मी सितारों से लेकर राजनेता आदि सभी तिरुपति बालाजी के दर्शन करने यहां आते हैं। गोविंदा के मंदिर तिरुपति बालाजी से जुड़ी कई मान्यताएं और विश्वास है। यहां कई ऐसी चीजें है जिनपर विश्वास करना थोड़ा मुश्किल होता है, वैज्ञानिक भी इन रहस्यों के पीछे की वजह तलाश रहे हैं। वैज्ञानिक कुछ भी कहें लेकिन वेंकटेश्वर के भक्त इसे भगवान का चमत्कार मानते हैं। आइये आपको बताते हैं कि तिरुपति बालाजी का ये मंदिर आखिर क्यों इतना प्रसिद्ध है। मंदिर में रखी बालाजी की मूर्ति अपना स्थान बदलती है। मंदिर में मूर्ति को देखकर तब आश्चर्य होता है जब बाला जी की मूर्ति को गर्भ–गृह से देखने पर वह मंदिर के मध्य में दिखाई देती है और जब मंदिर से बाहर आकर देखें तो वह अपना स्थान बदलकर दाई ओर दिखाई देने लगती है।

तिरुपति बालाजी के मंदिर में भगवान को एक पिचाई कपूर चढ़ाया जाता है। ये वह कपूर है जिसको अगर किसी और पत्थर पर लगाया जाता है तो वह पत्थर कुछ समय बाद चटक जाता है लेकिन भगवान की मूर्ति पर इसका कोई असर नहीं होती। कहते हैं कि तिरुपति बालाजी के मंदिर में जो भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति रखी है उस पर जो बाल लगे हैं वह असली है। यह बाल कभी भी नहीं उलझते। भक्तों की मान्यता है कि यहां भगवान स्वयं रहते हैं। तिरुपति बालाजी के मंदिर के इतिहास को देखें तो कहा जाता है कि 18 शताब्दी में मंदिर के मुख्य द्वार पर 12 लोगों को फांसी दी गई थी तब से लेकर आज तक वेंकटेश्वर स्वामी जी मंदिर में समय–समय पर प्रकट होते हैं। मंदिर में एक और अजीब घटना होती है जिसे लेकर लोग कहते हैं की सच में यहां भगवान रहते है। मंदिर में बालाजी की मूर्ति पर अगर कान लगाया जाए तो उसके अंदर से आवाज आती है। ये आवाज समुद्र की लहरों की होती है। एक बात और आश्चर्य करती है वो यह है कि मंदिर में बालाजी की मूर्ति हमेशा पानी से भीगी रहती है। जैसे समुद्र के पास एक शांति सी महसूस होती है वैसा ही एहसास मंदिर में होता है।

मंदिर में मुख्य द्वार के दरवाजे के पास एक छड़ी रखी है। इस छड़ी के बारे में कहा जाता है कि बालाजी के बाल रूप में इस छड़ी से उनकी पिटाई की गई थी। पिटाई के दौरान उनकी ठोड़ी पर चोट लग गयी थी। मंदिर के सेवक उनकी चोट जल्दी ठीक हो जाए इसलिए चंदन का लेप लगाते हैं। मंदिर में सबसे हैरान करता है बिना तेल के जलने वाला दिया। मंदिर में एक दिया है जिसमें कभी भी तेल नहीं डाला जाता और न ही उसमें कोई ज्वलनशील पदार्थ डाला जाता है, लेकिन तब भी दिया हमेशा जलता रहता है। इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है कि इस दिए को किसने जलाया था। तिरुपति बालाजी के मंदिर की मान्यता के अनुसार भगवान को जो फूल, पत्ती, तुलसी चढ़ाई जाता है उसे भक्तों को नहीं दिया जाता बल्कि उसे बिना देखे मंदिर के पीछे के कुंड में विसर्जित कर दिया जाता है। मान्यता है की इन फूलों को देखना शुभ नहीं होता।

प्रत्येक गुरुवार के दिन तिरुपति बालाजी पर चंदन का लेप लगाया जाता है। लेप को जब मूर्ति से हटाते है तो उनके अंदर माता लक्ष्मी की प्रतिमा उभर आती है। ऐसा क्यों होता है इसके बारे में कोई नहीं जानता। प्रतिदिन भगवान की प्रतिमा को नीचे धोती और उपर साड़ी पहनाई जाती है। तिरुपति बालाजी में जो कुछ चढ़ाया जाता है जैसे दूध, घी, माखन आदि को मंदिर से 23 किलोमीटर दूर स्थित गांव से लाया जाता है। इस गाव में बाहरी व्यक्ति नहीं जा सकता। इस गांव से लोग बाहरी लोगों को चढ़ाने का सामान देते हैं।

य.ब

Vol. 15 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners have dreams;
Losers have schemes.

*****

Winners see the gains;
Losers see the pain.

*****

Winners see the potential;
Losers see the past

*****

Winners make it happen;
Losers let it happen.

*****

Winners see possibilities;
Losers see problems

*****

Winners makes commitments;
Losers makes promises

*****

Winners say "I must do something";

Losers say "Something must be done".

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**